IMPACT FACTOR : 4.197 (IIJIF) ISSN: 2454-5503

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

VOL. 6 | ISSUE 4 | AUGUST 2020

अण्णा भाऊ साठे जन्मशताब्दी विशेषांक

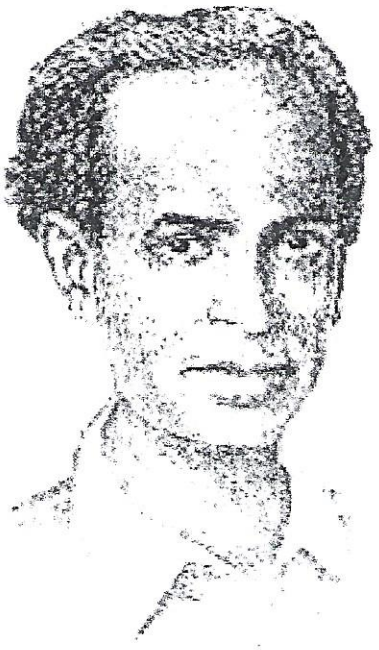

Guest Editors

Dr Raju Badure | Prof. Asha Giri

Editor in Chief

Dr Kalyan Gangarde

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

४३.

मानवतावादि लेखक :– अण्णा भाऊ साठे

प्रा.डॉ.मल्लिनाथ बिराजदार
जवाहर महाविद्यालय,अणदूर
मो.नं.९८९० ४७ ३२ ०३

देश के लिए विलास को ठुकराया था।
गीरे हुए को जिन्होंने स्वाभिमान सिखाया था ।
जिसने हम सबको तुफानों से टकराना सिखाया था ।
देश का वो था मानवतावादि लेखक जो अण्णाभाऊ साठे कहलाया था ...

प्रतिभासंपन्न मानवतावादि लेखक, लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठेजी का पूरा जीवन संघर्षमय रहा। मजदूर आंदोलन, लाल बावटा पत्रक, कम्युनिष्ठ पक्ष का कार्य और साहित्यसृजन इन चतु:सूत्र में आपका जीवन पिरोया था । साहित्य सम्राट अण्णा भाऊ साठे का मराठी साहित्य में अत्यंत उल्लेखनीय योगदान रहा है । उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, लोक नाटय, प्रवासवर्णन पॅवारा आदि मे समृध्द लेखन किया है । उनके साहित्य का प्रयोजन मानवतावादि रहा है । पुरानी परंपरा को तोडकर शोषण के खिलाफ लढनेवाली मानवतावादि दृष्टि उनके पास थी । समाज में समता स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य था । अस्मिता चांदणे के श्ब्दों में ''साहित्य ही अण्णा भाऊ का सर्वस्व था । मिट्टी में एक बीज बोये तो हजारो दाने मिलते है। लेकिन उसे बोने की अकल लगती है । अण्णा भाऊ ने कोटि–कोटि जनता को अन्न मिलने की योजना तैयार कर रखी है । आजीवन अंत तक अन्न के बिना, रोटी के बिना जीनेवाले अण्णा कभी भी भूके प्यासे नहीं दिखायी दिये । उनके साहित्य में उन्होंनो कभी भी स्वयं के भूख पर कथी लाठी नहीं चलायी। इसके विपरीत नियति ने, समाज ने, जिंदगी ने, संकटने उन्हे न्याय दिया या नहीं दिया लेकिन अण्णा ने अपने प्रत्येक खून का कतरा इत्सानियत के लिए स्वतंत्रता के लिए आधार मांगनेवाले हात को अंत तक न्याय दिया। [१]

मजदूरों का अंधकारमय जीवन प्रकाशिक हो । उन्हे न्याय और अधिकार मिले उनका भविष्य उज्वल हो इसलिए अण्णा भाऊ का कलम प्रज्वलित रही । अणाभाऊ कहा करते थे, मुझे रोना मान्य नहीं लडना मान्य है। बाबासाहब के विचार उनके नस–नस में कुट–कुट कर भरी हुई थी । वे दुनिया को बदलना

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

चाहते थे गुलामी के कीचड में फंसे हुए समाज को उपर उठाना चाहते थे इसलिए बाबासाहब के विचारों का हथियार वे उठाना चाहते है ।

'' दुनिया बदल कर वार
कह कर गए मुझे भीमराव।''

प्रबोधन पर गीतों के माध्यमसे मजदूर और जन सामान्य के जीवन में क्रांति का शंख नाद करना चाहते थे । डॉ.नरेंद्र राजवाडे के शब्दो में, ''अण्णा भाऊ ने कला पथक के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन चलाया था। इस आंदोलन के माध्यमसे लाखो लोग प्रभावित होकर आकिर्षित हो गये। इससे सामान्य नील मजदूरों के मन में अपने उपर होनेवाले अन्याय के खिलाफ जागरूकता निर्माण हो गयी। ''[२]

'जियो और जिने दो' की भावना वे इन्सान में निर्माण करना चाहते थे । मजदूर गुलाम नही है। मजदूर गुलाम नहीं है , वह भी इन्सान है। इन्सान को इन्सान जैसा रहने का अधिकार है। १९५८ मे महाराष्ट्र दलित साहित्य संमेलन के उद्घाटन पर भाषण में उन्होंने कहा था, '' यह पृथ्वी शेषनाग के मस्तक पर ठहरी नही बल्कि दलितों के हात के फोंडोपर टिकी हुई है । अण्णाभाऊ समाज में घटित घटनाओ को जागरूक दृष्टि से देखते है। उनका जन्म उपेक्षित अस्पृश्य समाज में होने के कारण उन्होंने बहुत कुछ सहा है । इसलिए वे सामाजिक कुरीति, अन्याय, अंध:श्रध्दा, जातियता, देखकर अस्वस्थ हो तडप उठते है । उनकी यह अस्वस्थता सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करती है। शुरूआत में वे मार्क्सवाद के नजदीके के लगते है मात्र बाद में वे दूरदृष्टि से देखने से लगता है कि वे आंबेडकरवाद के प्रति आकृष्ट होते हुए दिखाई देते है। उन्हें भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित जातिपर आधिारित समाजव्यवस्था बदलने के लिए। मनुष्यता की प्रतिष्ठा जपनेवाली आंबेडकरी विचारधारा जनदीक की है ऐसा उनके साहित्य मे व्यक्त विचारों से स्पष्ट होता है । अस्मिता चांदने के शब्दों में,''जिंदगी भर चिराग नगरी में रहकर, चिराग और मशाल बनकर अण्णाने जीवन.स्थापन किया। अण्णा चिराग नगरी में रहे या वाटे गांव में पौ फटने के बाद जैसे लालिमा छां जाती है । वैसे ही अण्णा की प्रतिभा प्रेम और दु:ख को गले लगाती है। हृदय से शब्दों के झरने फुटते है। टहनी पल्लवित हो फुट पडती है और शब्दों से शस्त्र बनने वाला साहित्य अणाभाऊ का हे।''[३]

डॉ.बाबासाहब आंबेडकर ने दलित साहित्यकारों को साहित्य निर्मिति के पीछे के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा था, मुझे साहित्यकारों को जान बुझकर बताना है कि उदात्त जीवन मूल्य और सांस्कृतिक मूल्य का अविष्कार साहित्य में होना चाहिए। अपने लक्ष्य को संकुचित न बनाकर विशाल बनाओ। अपनी

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist.

वाणी चार.दीवारी में बंद होनेवाली न होकर उसका विस्तार हो । अपना कलम अपने ही सवाल तक बंदिस्त मत करो। उसका प्रकाश देहातो कें हातो मे बसे अंध:कार तक पहुचांना चाहिए। यह मत भूलो की अपने देश में उपेक्षित और दलितों की, बहुत बड दुनिया है। उनका दु:ख , दर्द समझाकर साहित्य के माध्यमसे उँचा उठाकर न्याय देनें में ही सही मानवता है। डॉ. बाबासाहब आंबबेडकर ये विचार ही दलित साहित्य का घोषणापत्र. है। इस घोषणापत्र को सामने रखकर हीं अणा की कलम चलती है और समाज में स्थित अन्याय.अत्याचार का चिरफाड कर वस्त्र हरण करती है। अण्णभाऊ कहते है, मैंने जीवन में जो भी कुछ देखा, सहा, अनुभव किया वही मैं लिखता हूँ । वास्तवता को फालतु महत्व देने वाला कहकर कुछ मित्र मुझापर क्रोधित होते है पर मैं उनका क्रोध स्वीकारता नहीं और मेरा कार्य छोडता नहीं। वास्तविकता और काल्पनिकता को कैसे मिलाए यह प्रष्न मुझे सताती है। मेरें पात्र मुझे कहीं न कहीं मिलते है, उनका जीना मरना मुझे ज्ञात है। मैं कल्पना की उ्डान भरता हूॅ। बस इतना ही, कुलमिलाकर बाबासाहब का दिया हुआ संदेश कलमबध्द कर उपेक्षित, पीडित लोगों का दु:ख दर्द विश्व देहलीज पर रख ने के लिए सिध्द होती है। नारायण सुर्वे के शब्दो में, ''अण्णा भाऊ ने मिल में मजदूरी करते करते अपने कलम के माध्यम से स्वतत्रता आंदोलन में शामिल हो गये। उन्होंने लडनेवाला समाज निर्माण किया । सामान्य, देहाति, दलित शरम की जिंदगी जिनेवाला इन्सान उन के कलम का विषय हो गये । दलित, पीडित, नंगे जनता के संबंध में ह्रदय से लिखने वाला एक मात्र लेखक अण्णा भाऊ साठे ही है । अण्णा की स्वयं की शैली है। अण्णा कुंडी मे स्थित अंकुर न होकर पर्वत चोटी पर के महावृक्ष थे, सभी को छॉव देनेवाला।''४

अण्णा भाऊ साठे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । उन्होने पवारा से लेखन की शुरूआत की और लोक शाहीर सिध्द हो गये। आगे चलकर उन्होंने कहानी और उपन्यास के क्षेंत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया कहानी उपन्यास हो या पवारा, लावणी आदि साहित्य को समुध्द बनाया। अण्णा भाऊ ने जिने के लिए लढने वाले इन्सान चित्रित कर मराठी साहित्यको में फकीरा जैसे पात्रो को अमर बनाया। अणा भाऊ के साहित्य के सभी पात्र चलते बोलते इन्सान है । वे रूढी परंपरा को ठुकराने वाले, अन्याय के खिलाफ लडनेवाले न्याय की मांग करनेवाले, समाज के सामने आदर्श निर्माण करनेवाले यथार्थवादि पात्र है, और वे इस क्षेत्र में सफल बन गये है। उत्तम तुपे के शब्दो में,''अण्णाभाऊ साठे के कलम से निर्माण साहित्य में चित्रित रेखाच्त्रि मेहनती, प्रामाणिक और गरीब है । लाचारी उन्हें मंजुर नही । अन्याय सहने की क्षमता उनमें नही है। अन्याय के खिलाफ

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

लडनेवाले, मिट्टी से इमान रखनेवाले पात्र अण्णाभाऊ के साहित्य में कदम–कदम पर मिलते है।''[५]

मानवतावादि लेखक अण्णाभाऊ साठे ने मराठी साहित्य को कहानी, उपन्यास और अन्य कृतियों से समृध्द बनाया है। उनके प्रसिध्द उपन्यास इस प्रकार है – चित्रा (१९४५), फकिरा (१९५९), वारणेचा वाघ (१९६८), चिखलातील कमळ रानगंगा, माकडीचा माळ (१९६३), वैजयंता, रत्ना , रूपा, गुलाम, चंदन, मथुरा, आवडी, वैर पाझर आदि।

फकीरा : १९५९ में लिखी हुई विश्वविख्यात रचना है। १९१० में अंग्रेजों के खिलाफ बगावत करनेवाले मांग समाज के क्रांतिवीर फकीरा के संघर्ष पर था । इस पुस्तक को अण्णाभाऊ ने डॉ.बाबासाहब आंबेडकर को समर्पित किया था । ' फकीरा' मे अकाल के कारण निर्माण समस्या और दलित, गरीब, भूके लोगों को फकीराद्वारा अंग्रेजी खजाना लूटकर अनाज बॉटने का महान कार्य उल्लेखनीय है। फकीरा जब भेडसंगांव के खजिने पर हमला करता है तब रघूबमन की बीवी कहती है ''बाबा, यह हवेली धोकर सब कुछ ले जा, मेरी दो लडकियॉ शादी शुदा नही है, मै ऑचल फैलाकर भीक मॉगती हूँ, हमारी शर्म...'' कहकर घर की सभी महिलाएँ जब जेवर उतारकर देने लगें तब फकीरा कहता है– हम खजाना लेकर जानेवाले है, आपको लुटने के लिए नहीं आए। क्योंकि शर्म खाकर भूका इन्सान जीता नहीं

जीने के लिए रोटी, की आवश्यकता है। चरित्र और नीति अपनी और दूसरो की एक ही है । फकीरा की यह मानवतावादी विचार उपन्यास को उॅचाईयो पर ले जाती है और विचार करने के लिए प्रेरित करती है । यहॉ फकीर लुटारू नही तो एक इन्सान है यह सिध्द करता है इन्सानियत की भावना फकीरा में कुट–कुटकर भरी हुई है। बेडसगांव का लूटा हुआ खजाना वह सभी को समान हिस्से में बॉटता है। यहॉ फकीरा की समतावादि विचार दृष्टि के दर्शन होते है। देश की स्वतंत्रता, स्त्री का शील और चारित्र्य, पुरूष का स्वाभिमान और मानव प्रतिष्ठा आदि मानवी मूल्यों को अण्णा भाऊ ने अपने साहित्य में विशेष स्थान दिया है । डॉ.नागनाथ कोतापल्ले के शब्दो में , ''फकीरा' मात्र मांग समाज और दलित समाज का चित्रण करनेवाली कलाकृति नहीं हैं वह पूर्णत: मराठी समाज की कलाकृति है । वह तभी संभव है जब पुरे समाज के प्रति एक व्यापक सहानुभव अभिमान लेखक के पास होना आवश्यक है । उस समाज के बारें में लेखक को अंतर्मन से लगन और प्रेम हो तभी लेखक सामाजिक उत्थान और मानवमुक्ति की दिशा में विचार करने लगता है। यह सब अण्णा भाउफ साठे के साहित्य में सहज उपलब्ध है क्योंकि समाज के प्रति वे पारंपारिक दृष्टि से

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

देखते है इसलिए अस्पृश्यो के स्वाभिमान और पराक्रम का चित्र खींचने का साहस उनमें था । यह मराठी में पहली बार घटित होते हुए दिखाई देती है। ''७

इस प्रकार अण्णा भाऊ साठे एक क्रांतिकारी मानवतावादी लेखक थे । दीपक प्रकाश देता है मगर इसके लिए उसे तिल तिल कर जल कर मरना होता है। अण्णा भाऊ गरीबों के लिए तिल तिल जलकर प्रकाश देनेवाले महान लेखक के रूप में सामने आते है अण्णा भाऊ का जन्म मांग जाति में हुआ था जिसे अंग्रेजो ने अपराधी जाति घोषित कर रखा था। हिन्दू वर्णाश्रम धर्म में मांग जाति के लोगों का कार्य गांव की पहरेदारी करना होता है। उनके घरों की दीवारोंपर तलवार लटकती रहती है मगर घर में खाने को नही रहता अण्णा भाऊभी इससे अलग नहीं थे।

देश में उस समय अंग्रेजो के खिलाफ आन्दोलन हो रहे थे । अण्णा भाऊ ने १९४७ के दौरान नाना पाटील आदि क्रांतिकारियों के साथ अंग्रेजो के विरूध्द बगावत में डट कर भाग लिया था। उस समय अण्णा भाऊ कम्युनिस्ट पार्टी के साथ जुडे थे। उन के उपर पार्टी का प्रचार कार्य था। अण्ण भाऊ दलित–शोषितों के बीच एक लोकप्रिय जन कवि के रूप में प्रसिध्द थे, क्रांतिकारी शाहिर थे। वे एक बडे ही दिलचस्प, मानवतावादि कलमकार थे । उन्हों नें अपनी कविता, कहानी, उपन्यास और नाटकों से दितित शोषितों को उनके अस्मिता की जुबान दी थी । उन्होने 'लोकयुध्द' के साप्ताहिक रिपोर्टर के तौर पर भी काम किया था । अण्णा भाऊ के क्रांतिकारी विचार रूस, जर्मनी, पोलंड आदि देशों तक पहुँची थी, उनकी किताबों के वहॉ अनुवाद हुए थे । इन मुल्कों में वे शोषितों के साहित्यकार के रूप में पहचाने जाने लगे थे।

एक बार उनके मित्र ने उनसे कहा कि अण्णा भाऊ, आपकी कई किताबों का अनुवाद विदेशों में हुआ है। मास्को में आपके अनुवादित किताबों के रकम की भारी रायल्टी वहां इकठठा हुई होगी. आप उसे हासिल करके बडा सा बंगला क्यों नहीं बनवा लेते और फिर वहां लिखने का कार्य जारी रख कसते है? इस पर अण्णा भाऊ ने कहा था कि, बंगले में मजे से आराम कुर्सी पर बैठकर लिखने के सिर्फ कल्पना है। लेकिन, गरीबी का दर्द और पीडा भूखे पेट रह कर ही महसूस की जा सकती है। अमृतलाल के शब्दों में , अण्णा भाऊ की ख्याति के साथ–साथ उनके दुश्मन भी पैदा हुए थें ब्राम्हण कम्युनिष्ठ तो हाथ धोकर कबके अनके पीछे पडे थे उनकी कविता, कहानी और नाटकों पर स्थापित राष्ट्रीय साहित्यकारों को खासी आपत्ति थी । उनके लिये नाटकों के मंचन में भारी रूकावट पैदा हो रही थी । अंतत: अण्ण भाऊ को नाटकों मे

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

भारी रूकावट पैदा हो रही थी । अंततः अण्णा भाऊ को नाटकों से अपने को अलग करना पडा । यह उनके लिए बड आघात था। आघात इतना बडा था कि उससे बर्दास्त नहीं कर पाए और उन्होंने अपने आप को शराब के हवाले कर दिया ।

जिस शख्स के घर के सामने से शराबी जाने से डरता था। वह अब शराब का दास बन गया धीरे धीरे अण्णा भाऊ मौत के मुंह में समाने लगे । उनके प्रकाशको ने उनके साथ दगा किया । उनके अपने रिश्तेदारों ने उनके पास जो भी था, उसे हजम कर लिया। और फिर यह मानवतावादि लेखक, लोक शाहिर १८ जुलाई १९६९को सदा के लिए मौत के मुंह मे समा गये।''

सोंचता हूँ आखिर, ऐसे क्रान्तिकारी जनकवि की मौत यूँ क्यों होती है ? जो शख्स जन चेतना की अलख की अलख जगा ने अपनी जिंदगी कुर्बान कर देता हो, सामाजिक क्रांति की बात करते करने सीने पर गोली खाने का माद्दा रखता हो, उसके खुद्दारी की इन्तहा उस कदर क्यों होती है? मुझे लगता है कि विश्वविद्यालयों में पढनेवाले जिन बच्चो ने अण्णा भाऊ संघर्ष पर पीएच डी और डॉक्रेट किया है आज नही तो कल जरूर वे इस पर गौर करेंगे।''[८]

निसंदेह डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के कार्यो ने दलित समाज के लेखकांके, कवि और नाटककारों में सामाजिक जागरूकता के लिए काम कर ने की प्रेरणा दी थी । वही प्रेरणा लेकर अण्णा भाऊ साठे लिखते रहे। उन्हें समझ में आया कि , जाति –पांति और गरीबी सामाजिक समानता की राह में सबसे बडी बाधक है आर्थिक असमानता केवल नियति की देन नही है। उसका कारण वे लोग है जो देश और समाज के धन पर कुंडली मारे बैठे है यह भी समझ में आया कि गाने–बजाने का उद्देश्य केवल मनोरंजन नही है । उससे सोये हुए समाज को जगाया भी जा सकता है। उसी दिन अन्ना के लोकशाहिर अण्णा भाऊ बनने की नींव पडी। मानवतावादी लेखक अण्णा भाऊ के पात्रों को देखकर कहा जा सकता है –ये मुरदा नहीं ; हाड–मांस के जिदा इन्सान है। बिगडैल घोडे पर सवारी करने की कूवत इनमे है। इन्हें तलवार से जीत पाना नामुमकिन है। ''

संदर्भ :

१) चांदणे अस्मिता 'लोक साहित्यिक अण्णा भाऊ साठे 'समग्र वांङमय' खंड –१, प्रतिमा पब्लिकेशन्स, पुणे पृ– संपादकीय

२)डॉ.राजवाडे नरेंद्र जगबदल घालुनी धाव –लेख, डॉ.उज्वला हातांगळे दै.सकाळ १ अगस्त २०१९ पृ.७

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

३) चांदणे अस्मिता 'लोक साहित्यिक अण्णा भाऊ साठे 'समग्र वांङमय' खंड –१, प्रतिमा पब्लिकेशन्स, पुणे पृ– संपादकीय

४) सुर्वे नारायण 'लोक साहित्यिक अण्णा भाऊ साठे 'समग्र वांङमय' खंड –१, प्रतिमा पब्लिकेशन्स, पुणे पृ– संपादकीय पृ.साहित्य विष्यक गौरवोद्‌गार

५)तुपे उत्तम 'लोक साहित्यिक अण्णा भाऊ साठे 'समग्र वांङगय' खंड –१, प्रतिमा पब्लिकेशन्स , पुणे पृ– संपादकीय

६) साठे अण्णा भाऊ. फकीरा 'लोक साहित्यिक अण्णा भाऊ साठे 'समग्र वांङमय' खंड –१, प्रतिमा पब्लिकेशन्स , पुणे पृ.१९७

७)डॉ.कोतापल्ले नागनाथ. 'लोक साहित्यिक अण्णा भाऊ साठे 'समग्र वांङमय' खंड –१, प्रतिमा पब्लिकेशन्स , पुणे पृ– संपादकीय पृ.गौरवोद्‌गार

८) अमृतलाल ब्लॉग स्पॉट.कॉम ३० नवंम्बर २०११.

❑❑❑

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad